प्रवाह

निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक
स्थापना वर्ष : 1948

सफल कूटनीति उद्देश्यों और साधनों का एक बेहतर तालमेल होती है
- डेनिस रॉस

अमेरिकी राजनयिक

अमेरिका के दबाव में अगर आगामी दो मई से भारत को ईरान से कच्चे तेल का आयात पूरी तरह बंद करना पड़े, और इस दौरान बीच का कोई रास्ता सचमुच ही न निकले, तो यह भारत के लिए आर्थिक रूप से ही नहीं, कूटनीतिक दृष्टि से भी नुकसानदेह होगा।

तेल की धार

कुल आठ देशों को आगामी दो मई से ईरान से कच्चे तेल का आयात पूरी तरह बंद करने की अमेरिका की चेतावनी अप्रत्याशित भले न हो, लेकिन उसका यह एकपक्षीय फैसला भारत के लिए आर्थिक और कूटनीतिक रूप से नहीं, ऐन चुनाव के बीच राजनीतिक रूप से भी नुकसानदेह साबित हो सकता है। चीन के बाद भारत ईरान के तेल का दूसरा सबसे बड़ा आयातक ही नहीं है, बल्कि उससे हमारे बेहद पुराने रिश्ते भी रहे हैं। हालांकि विगत नवंबर से ही भारत ने ईरान से तेल का आयात कम कर दिया था, लेकिन कीमत और उधारी की सुविधा के मामले में ईरान से तेल आयात करना हमारे लिए ज्यादा सुविधाजनक है, क्योंकि वह साठ दिन की उधारी के अलावा मुफ्त शिपिंग व बीमा की सुविधा भी देता है, जो दूसरे देश नहीं देते। मुश्किल यह भी है कि देश में ऊर्जा की बढ़ती मांग के मद्देनजर कच्चे तेल और प्राकृतिक गैस का उत्पादन कम रह गया है। भारत दुनिया में तेल का तीसरा सबसे बड़ा उपभोक्ता है, जो अपने इस्तेमाल का 80 फीसदी तेल और 40 प्रतिशत प्राकृतिक गैस आयात करता है। चूंकि अमेरिका ने वेनेजुएला पर भी प्रतिबंध लगाया है, तथा ओपेक ने उत्पादन कम करने का फैसला लिया है, ऐसे में, उपलब्धता घटने से कच्चे तेल के दाम बढ़ने तय हैं। विगत सोमवार को छूट खत्म करने की अमेरिकी घोषणा के बाद ब्रेंट क्रुड के दाम 3.3 फीसदी बढ़कर 74.31 डॉलर प्रति बैरल हो गए, जो पिछले छह महीने में एक दिन के दौरान होने वाली सर्वाधिक वृद्धि है। जाहिर है, तेल आयात का खर्च बढ़ने से चालू खाते का घाटा बढ़ेगा, रुपया कमजोर होगा और मुद्रास्फीति भी बढ़ेगी। अमेरिका के इस एकपक्षीय फैसले की अनदेखी करना मुश्किल है, क्योंकि अंतरराष्ट्रीय बैंकिंग लेन-देन अमेरिकी बैंकिंग चैनल के जरिये ही होते हैं। जब यूरोपीय संघ ही अमेरिकी चेतावनी की अनसुनी करने की स्थिति में नहीं है, तो भारत की भला क्या बिसात! यह घटनाक्रम न केवल एकध्रुवीय विश्व और अमेरिका के महाशक्ति देश होने का प्रमाण है, जो ईरान की मौजूदा सत्ता को हटाने की जिद में वैश्विक अर्थव्यवस्था और अपने दोस्तों की भी परवाह नहीं कर रहा, बल्कि यह डोनाल्ड ट्रंप जैसे राष्ट्रपति की सनक के कारण दुनिया को होने वाले नुकसान का भी सुबूत है। ऐसे में, भारत के लिए दूरदर्शिता इसी में है कि वह तेल आयात के उन दूसरे स्रोतों पर नजर रखे, जो उसके लिए सुविधाजनक हों।

अमेरिका साथ दिखा तो चीन पड़ा नरम

जैश-ए-मोहम्मद के संस्थापक मसूद अजहर पर कुछ बदले रुख का संकेत देने के साथ ही बेल्ट ऐंड रोड पर भारत की शंकाएं दूर करने की कोशिश चीन के कूटनीतिक लचीलेपन की एक रेखा है।

प्रदीप कुमार

विदेश सचिव विजय गोखले की चीन यात्रा और बेल्ट ऐंड रोड फोरम की बैठक से पहले चीन के विदेश मंत्री वांग यी ने महत्वपूर्ण संदेश दिया कि भारतीय प्रधानमंत्री के साथ वूहान जैसी एक और शिखर वार्ता की तैयारी की जा रही है। मौका था आज 25 अप्रैल से शुरू हो रहे बेल्ट ऐंड रोड फोरम (बीआरएफ) के विशाल सम्मेलन की ब्रीफिंग का। लेकिन उनकी प्रेस कॉन्फ्रेंस का खासा हिस्सा भारत से संबंधित था। वांग ने कहा कि बेल्ट ऐंड रोड इनिशिएटिव (बीआरआई) पर चीन भारत की चिंताओं को समझता है। इसीलिए हमने कई बार कहा है कि यह आर्थिक पहल है और उसका निशाना कोई तीसरा देश नहीं है। हम तो बीआरआई के जरिये सहयोग कर सामूहिक समृद्धि हासिल करना चाहते हैं।

इस ऐतिहासिक सड़क के तहत बन रहा चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारा भारतीय राज्य जम्मू-कश्मीर के उस भाग से निकल रहा है, जिस पर पाकिस्तान ने अवैध कब्जा कर रखा है। भारत इसे अपनी प्रभुसत्ता का उल्लंघन मानता है। वांग ने कहा, 'इतिहास से विरासत में मिले कश्मीर जैसे मुद्दों को, इस क्षेत्र में हमारे प्रयासों से दूर रखना चाहिए। इससे भारत की प्रभुसत्ता और भौगोलिक अखंडता संबंधी बुनियादी अवस्थिति पर प्रभाव नहीं पड़ेगा। साथ ही भारत को विकास के अधिक अवसर मिलेंगे, जो आधुनिकीकरण के प्रयासों में सहायक होंगे। हमारा विश्वास है कि यह भारत के लिए अच्छा विकल्प है।'

अगले हजार साल तक के सामरिक चिंतन में लगा चीन जरूर समझता होगा कि भारत प्रभुसत्ता के मुद्दे को कभी नहीं छोड़ सकता। कोई स्पष्ट विभाजक रेखा न होने के बावजूद जवाहरलाल नेहरू मैकमोहन लाइन पर रत्ती भर भी समझौता करने का साहस नहीं जुटा पाए थे। संसद से लेकर सड़क तक ऐसी स्थितियां बन गई थीं कि कोरिया में अमेरिकी सेना के दांत खट्टे कर देने वाली चीनी सेना से भिड़ने के अलावा भारत की कमजोर सेना के सामने कोई विकल्प नहीं बचा था। कश्मीर विवाद में किसी संदेह की गुंजाइश नहीं है। पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर से चीन-पाक गलियारा निकले और भारत इसे प्रभुसत्ता का विषय न माने, यह मुमकिन ही नहीं है। नई दिल्ली में कभी निहायत कमजोर सरकार बने, तो उसके लिए भी यह संभव न होगा। राष्ट्रवाद को चुनावी मुद्दा बनाने वाली सरकार तो स्वप्न में भी नहीं सोच सकती।

जैश-ए-मोहम्मद के संस्थापक मसूद अजहर पर कुछ बदले रुख का संकेत देने के साथ ही बेल्ट ऐंड रोड पर भारत की शंकाएं दूर करने की कोशिश चीन के कूटनीतिक लचीलेपन की एक रेखा है। कल्पना करें कि मसूद अजहर पर चीन भारत के अनुकूल कोई फैसला कर लेता है। वह फैसला अंतरराष्ट्रीय थू-थू से बचने के लिए होगा। उससे चीन, पाकिस्तान या भारत के बुनियादी सामरिक हितों पर असर नहीं पड़ेगा। आईएसआई फिर कोई नया मसूद अजहर खड़ा कर लेगी। पाक अधिकृत कश्मीर की जमीन पर बेल्ट ऐंड रोड भारत की कम, चीन की समस्या अधिक है। अधिकृत कश्मीर का कई हजार वर्ग किलोमीटर क्षेत्र पाकिस्तान ने पहले से चीन को दे रखा है। निर्णायक युद्ध के बगैर भारत पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर को मुक्त नहीं करा सकता। लेकिन भारत के सामरिक हितों को प्रभावित करने वाले कार्यों के लिए अगर गलियारे का इस्तेमाल होगा, तो बड़े स्तर पर बालाकोट की पुनरावृत्ति का विकल्प नई दिल्ली में किसी साहसी सरकार के सामने मौजूद रहेगा। चीन की अधिक गंभीर चिंता है भारत और अमेरिका के बीच बढ़ रहा सामरिक सहयोग।

अमेरिकी प्रतिनिधि सभा में रिपब्लिकन और डेमोक्रेटिक, दोनों पार्टियों के सदस्यों ने भारत को नाटो के सहयोगी देश का दर्जा देने के लिए एक विधेयक पेश किया है। इस बिल के कानून बनने पर एशिया-प्रशांत क्षेत्र में चीन की पेशानी पर बल आने लगेंगे। इससे पहले भारत की उपग्रह मारक क्षमता के सफल परीक्षण का जब 'नासा' ने विरोध किया, तो अमेरिकी प्रशासन ने उसका प्रतिवाद करते हुए भारत का समर्थन किया। सशस्त्र सेनाओं संबंधी अमेरिकी सीनेट की बैठक में सामरिक कमान के चीफ जनरल जॉन हाइटन ने कहा,'भारत ने यह परीक्षण क्यों किया? सीधा जवाब यह है कि भारत अंतरिक्ष से अपने लिए खतरा महसूस कर रहा है। इसलिए भारत अंतरिक्ष में अपनी रक्षा करना चाहता है।' यह रेखांकित करने की जरूरत भारत को भी नहीं थी कि अंतरिक्ष में खतरा चीन से है।

भारत की सामरिक स्वायत्तता बनाए रखते हुए अमेरिका से सामरिक संबंध किस हद तक प्रगाढ़ किए जाएं? इसका उत्तर इस प्रश्न से निकलता है कि सुदूर भविष्य के लिए हमारा कोई राष्ट्र हित चिंतन है या नहीं। अगर है, तो अमेरिका के साथ रहना होगा। पाक-चीन गठजोड़ की कारगर काट वाया वाशिंगटन ही संभव हो सकती है। ठीक उसी तरह जैसे माओत्से तुंग ने बिरादराने सोवियत संघ को शिथिल करने के लिए अमेरिका का सामरिक सहयोगी बनने की हिम्मत जुटाई थी। दूरगामी हितों को सुरक्षित करने वाले देश हर संभावना से निपटने को तैयार रहते हैं। दक्षिण एशिया सामरिक परिदृश्य की अमेरिकी विद्वान सी. क्रिस्टीन फेयर अपनी नवीनतम किताब *इन देयर ओन वर्ड्स : अंडरस्टैंडिंग लश्कर-ए-तैयबा* में लिखती हैं, 'भारत अपने दम पर पाकिस्तान को आतंकवाद छोड़ने के लिए बाध्य नहीं कर सकता। वह क्षमता सिर्फ अमेरिका के पास है।....प्रमुख शहरों में भयानक क्षति और हताहतों की बड़ी संख्या के बावजूद भारत परमाणु हमले से बच निकलेगा। लेकिन भारत की जवाबी कार्रवाई में पाकिस्तान का राजनीतिक अस्तित्व समाप्त हो जाएगा। बेहतर यह होगा कि अमेरिका उसकी घोषणा करे।'

तर्क की खातिर मान लें कि अमेरिकी थिंक टैंक और क्रिस्टीन फेयर जैसे विशेषज्ञ अमेरिकी पाश में भारत को बांधने के उद्देश्य से इस तरह के भयावह परिदृश्य उपस्थित करते हैं। मोमबत्ती लॉबी यही चाहेगी। तब यह भी सोचना होगा कि चीन और उसके प्रॉक्सी पाकिस्तान की दुरभिसंधियों को नाकाम करने का भारत के पास क्या रास्ता है।

अंतर्ध्वनि

>> ली शिझेंग

कविता महसूस करने की चीज है, जो दिल से निकलती है

जब मैं मिड्ल स्कूल में पढ़ता था, तो मुझे कविता से नफरत थी। मैंने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि कवि बनूंगा। लेकिन बाद में दो ऐसी घटनाएं हुईं, जिन्होंने मुझे पूरी तरह बदल दिया। मुझे दो कवियों के साथ ग्रामीण इलाके में भेजा गया, जो आधुनिक कविताएं लिखते थे। जब मैंने उनकी कविताएं देखीं, तो मुझे लगा कि ये अच्छी कविताएं नहीं हैं। फिर मुझे बॉदलेयर की कविताओं का अनुवाद पढ़ने का मौका मिला और मुझे लगा कि ये महान कविताएं हैं! मुझे भी ऐसी कविताएं लिखनी चाहिए।

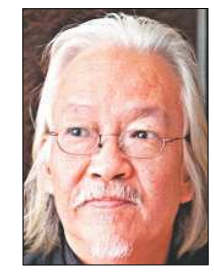

पहले चीन में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता नहीं थी। लेकिन मेरा मानना है कि अगर आपके पास कागज और कलम है, तो आप लिख सकते हैं। और मैं ग्रामीण इलाकों की सच्चाई, किसानों के मुश्किल भरे जीवन को लिखना चाहता था, जो महत्वपूर्ण था। मुझे लगता है कि कविता को राजनीति से अलग होना चाहिए, इसे महज खबर या बयान नहीं होना चाहिए। ऐसा करना कविता का अति सरलीकरण होगा। कविता की भाषा उच्च स्तर की होनी चाहिए और पहले कही गई बातों को दोहराने के बजाय, कुछ नया कहना चाहिए। कविता समझने की नहीं, महसूस करने की चीज है, जो दिल से निकलती है। आजकल हर कोई कविता के अर्थ के बारे में बताता है। मुझे लगता है कि यह कविता का अति सरलीकरण है। कविता का अर्थ निकालने से ज्यादा महत्वपूर्ण उसकी प्रशंसा करना है। अच्छी कविता बहुलार्थी होती है। यह मिठाई नहीं है कि आपने निकाली और निगल ली। यह खुद को अभिव्यक्त करने का एक अति गंभीर तरीका है। हर किसी का अपना पाठबोध होता है, यही कारण है कि विभिन्न लोग कविता पढ़कर उसे अलग-अलग तरह से महसूस करते हैं। मेरे लिए अच्छी कविता वह है, जो मुझे छूती है, मुझ पर प्रहार करती है और मुझे मजबूत बनाती है।

-चीन के मशहूर कवि

मंजिलें और भी हैं

>> शीलू फ्रांसिस

तीस हजार किसानों को मोटे अनाज की खेती से जोड़ा

मैं तमिलनाडु में रहती हूं और कृषि और पर्यावरण के क्षेत्र में काम करती हूं। मैंने यूनिवर्सिटी ऑफ लंदन से जेंडर प्लानिंग फॉर डेवलपमेंट में डिप्लोमा किया है। तमिलनाडु में खेती की स्थिति बहुत खराब है। गन्ने और धान जैसी नकदी फसल के कारण तमिलनाडु में भूमिगत जलस्तर बहुत नीचे चला गया है। बाजार में धान की उपलब्धता अधिक होने के कारण किसानों को कीमत भी कम मिलती है। तमिलनाडु में महिला किसानों की संख्या अधिक है। खेती की बदहाल स्थिति का खामियाजा उन्हें सबसे ज्यादा भुगतना पड़ता है, क्योंकि वे शाम को खेतों में काम करने के बाद रात में रसोई में खाना बनाती हैं। मैंने पूरे राज्य का दौरा करने के बाद पाया कि भूमिगत जलस्तर के गिरने के कारण जहां किसानों की आय बहुत ही कम रह गई है, वहीं वे कुपोषित भी हैं, और पुरुषों की तुलना में महिलाएं ज्यादा कुपोषित हैं। फसल के लिए कर्ज लेने के अलावा उन्हें अपनी गृहस्थी चलाने के लिए भी नए सिरे से कर्ज लेना पड़ता है। चूंकि तमिलनाडु में सूखे की समस्या लंबे समय से है, ऐसे में भूमिगत जलस्तर का लगातार गिरते चले जाना बेहद गंभीर मुद्दा है।

मैंने महिला किसानों के लिए ही काम शुरू किया, क्योंकि शोषण का शिकार सर्वाधिक महिलाएं ही होती हैं।

इस समस्या का समाधान करने के लिए मैंने वुमन्स कलेक्टिव नाम से एक संस्था शुरू की। मैंने महिला किसानों के लिए ही काम शुरू किया, क्योंकि मेरा मानना है कि शोषण का शिकार सर्वाधिक महिलाएं ही होती हैं। जगह-जगह महिला किसानों से मिलकर मैंने धान के बजाय ज्वार और बाजरे की खेती करने का सुझाव दिया, क्योंकि इनकी खेती में ज्यादा पानी की जरूरत नहीं पड़ती। मैंने उन्हें यह भी बताया कि पहले हमारे देश में जलस्तर गिरने की समस्या नहीं थी, क्योंकि भौगोलिक स्थिति के मुताबिक ही खेती की जाती थी। अब ज्यादा मुनाफे के चक्कर में नकदी फसल उपजाई जाती है, जिसके लिए ज्यादा पानी की जरूरत होती है। मुझे यह भी पता चला कि राज्य में पहले बड़े पैमाने पर मोटे अनाज का उत्पादन होता था, पर गन्ने की खेती करने के लिए किसानों को कर्ज मिलता है, इसलिए बड़ी संख्या में लोगों ने ज्वार-बाजरे की जगह गन्ने की खेती शुरू की थी।

शुरुआत में दो गांवों की महिलाओं ने मेरी सलाह पर अमल किया। ज्वार और बाजरे की फसल न केवल कम पानी में भी अच्छी हुई, बल्कि किसानों को उनके ज्यादा दाम मिले, क्योंकि राज्य में इसकी खेती कम होती है, जबकि पौष्टिक होने के कारण हाल के वर्षों में इनकी मांग बढ़ी है। मैंने किसानों को रासायनिक उर्वरकों का इस्तेमाल न करने की भी सलाह दी। कुछ किसानों को मेरा यह सुझाव अच्छा नहीं लगा, क्योंकि खेतों की उर्वरा शक्ति घट चुकने के कारण वे रासायनिक उर्वरकों के अधिक इस्तेमाल के आदी हो चुके थे। लेकिन उन किसानों ने पाया कि मेरी सलाह पर जैविक खाद का इस्तेमाल करने के बावजूद मोटे अनाज का उत्पादन पर्याप्त हुआ।

इसका नतीजा यह हुआ कि धीरे-धीरे किसानों में खेती का पैटर्न बदलने की इच्छा जागी। अचानक ही धान की जगह ज्वार, बाजरा और रागी जैसे मोटे अनाज की खेती बढ़ने लगी है। बाजार में इनकी कीमत तो अधिक मिलती ही है, इनका सेवन कुपोषण की समस्या का भी इलाज है। खेती का यह पैटर्न जारी रहा, तो भूमिगत जलस्तर के नीचे जाने का खतरा भी नहीं रहेगा। राज्य के करीब 30,000 किसानों ने नकदी फसल छोड़ मोटा अनाज उपजाना शुरू किया है, जो एक अच्छा संकेत है।

-विभिन्न साक्षात्कारों पर आधारित।

नौकरशाही का भ्रष्टाचार भी है मुद्दा

शासन तंत्र की मुख्य धुरी नौकरशाही के कारण देश की प्रतिष्ठा तथा अर्थव्यवस्था को समय-समय पर हानि हुई है। इसी का परिणाम है कि इस देश में पर्याप्त संसाधन होते हुए भी चारों तरफ गरीबी, बेरोजगारी तथा निराशा का माहौल है।

हर बार चुनाव के समय राजनीतिक पार्टियां लोक-लुभावन वादे करके जनता से वोट मांगती हैं। पर जनता को रोजमर्रा के जीवन में भ्रष्टाचार के कारण जो मुश्किलें झेलनी पड़ती हैं, उन्हें मिटाने के लिए वे कोई रोडमैप प्रस्तुत नहीं करती हैं।

बड़े-बड़े घोटाले और भ्रष्टाचार की खबरें तो सुर्खियों में रहती हैं, लेकिन नौकरशाही के कारण जो भ्रष्टाचार आम लोगों की जिंदगी को मुश्किल बना रहा है, उसके बारे में कोई चर्चा नहीं होती। रोजमर्रा के जीवन में लोगों को विभिन्न सरकारी सुविधाएं पाने के लिए रिश्वत देनी पड़ती है। अभी हाल ही में कुछ पूर्व नौकरशाहों ने चुनाव आयोग की कार्यप्रणाली को लेकर एक शिकायती पत्र महामहिम राष्ट्रपति को लिखा, जिसमें उन्होंने चुनाव आयोग पर आरोप लगाए हैं कि वह निष्पक्षता, दक्षता और पारदर्शिता से अपने कर्तव्य का निर्वहन नहीं कर रहा है। इन पूर्व नौकरशाहों को चुनाव आयोग की कार्यप्रणाली से तो प्रजातंत्र पर खतरा महसूस हुआ, लेकिन उन्हें नौकरशाही का भ्रष्टाचार नहीं दिखता, जिसके कारण पूरे देश में असंतोष और निराशा का माहौल पैदा हो गया है।

पूर्व वरिष्ठ पुलिस अधिकारी प्रकाश सिंह ने इस समस्या को समझते हुए उच्चतम न्यायालय में पुलिस सुधार के लिए 2006 में एक याचिका दायर की थी, जिसे स्वीकार करते हुए सुप्रीम कोर्ट ने अंग्रेजों द्वारा लागू पुलिस ऐक्ट, 1861 में बदलाव तथा सुधारों के लिए सरकार को निर्देश दिए, ताकि पुलिस का स्वरूप सामंतवादी के बजाय प्रजातांत्रिक बन जाए। परंतु ऐसे प्रयास सिविस सर्विसेज कोड को बदलने के लिए नहीं किए गए।

शिवदान सिंह

भारतीय नौकरशाह मौका मिलने पर सिविल सर्विस कोड में दी गई अपार शक्तियों का प्रयोग केवल अपने स्वार्थ के लिए करने लगे और देश की गरीब जनता का शोषण करने के साथ-साथ कल्याणकारी योजनाओं के लिए आवंटित धन में हेराफेरी करने लगे। मगर हैरानी की बात यह है कि रंगे हाथों पकड़े जाने पर भी किसी नौकरशाह पर अभियोग चलाने के लिए सरकार की अनुमति अनिवार्य है! भारत के वरिष्ठ नौकरशाह और पूर्व चीफ विजिलेंस कमिश्नर एन विट्ठल ने कहा था कि राजनीतिज्ञों से ज्यादा नौकरशाह भ्रष्ट हैं, क्योंकि राजनेताओं को तो जनता एक समय बाद हटा सकती है, लेकिन नौकरशाह पूरे सेवा काल तक भ्रष्टाचार करता रहता है।

शासन तंत्र की मुख्य धुरी नौकरशाही के कारण देश की प्रतिष्ठा तथा अर्थव्यवस्था को समय-समय पर हानि हुई है। इसी का परिणाम है कि इस देश में पर्याप्त संसाधन होते हुए भी चारों तरफ गरीबी, बेरोजगारी तथा निराशा का माहौल है। क्या यह प्रजातंत्र के साथ विश्वासघात नहीं है? दुर्भाग्य की बात है कि भारत की कोई भी राजनीतिक पार्टी नौकरशाही के भ्रष्टाचार को मिटाने के लिए कोई योजना नहीं पेश कर रही है! भारतीय जनता पार्टी ने 2014 के चुनाव में विदेशों में जमा काला धन वापस लाने तथा भ्रष्टाचार मिटाने का वादा किया था, परंतु उसकी कोई योजना नहीं बताई थी, जिसके चलते न तो काला धन आया और न भ्रष्टाचार मिटा!

अगर हमें नया भारत बनाना है और सबको न्याय तथा विकास का लाभ देना है, तो इसके लिए नौकरशाही को देश की अपेक्षा के अनुसार बनाना होगा! इसके लिए नौकरशाही में प्रवेश के तरीकों तथा प्रशिक्षण में परिवर्तन करने होंगे! सेवा में प्रवेश के समय इनका मनोवैज्ञानिक परीक्षण अनिवार्य होना चाहिए, ताकि इनकी मनःस्थिति का पता चल सके! इससे देश के निचले स्तर से भ्रष्टाचार मिटेगा तथा देश में समरसता तथा राष्ट्रीयता की भावना मजबूत होगी! क्या राजनीतिक दल भ्रष्टाचार मिटाने का कोई रोडमैप जनता के सामने पेश करेंगे।

हरियाली और रास्ता

राजा, गांववाले और सड़क

एक ग्रामीण की कहानी, जिसने राजा को अपनी सोच बदलने के लिए मजबूर किया।

एक राजा अपने राज्य के लोगों को खुश रखने की पूरी कोशिश करता था, पर हर बार उसे निराशा ही हाथ लगती। एक दिन राजा को पता चला कि लोग उससे खुश नहीं हैं। राजा को यह जानकर बहुत दुख हुआ। उसने तय किया कि वह पूरे राज्य का पैदल भ्रमण करेगा और राज्य के लोगों की परेशानियों को समझने की कोशिश करेगा। पहले दिन राजा सुबह पांच बजे ही महल से निकल पड़ा। राजा को चलने की आदत तो थी नहीं, ऊपर से सड़कें भी उसी इलाके में बनीं थीं, जिन पर राजा रोज आता-जाता था। इसीलिए राजा को पहली बार पथरीले रास्तों पर चलना पड़ रहा था। ऐसे में, शाम तक राजा की हिम्मत ने जवाब दे दिया। उसने एक जगह डेरा डालने का फैसला किया। राजा ने वहीं एक गांव में दरबार लगाया। राज्य की बदतर सड़कों पर बात होने लगी। राजा ने आदेश दिया कि पूरे राज्य में चमड़े की सड़कें बनवा दी जाएं। राजा को लगा कि यह सुनकर लोग खुश हो जाएंगे। लेकिन लोग खामोश ही थे। राजा ने एक ग्रामीण से पूछा, क्यों, अब तुम खुश तो हो न? वह व्यक्ति काफी देर तक शांत खड़ा रहा। राजा को यह देखकर बहुत गुस्सा आया। उसे लगा कि जनता का दिमाग खराब हो गया है। मैं इसकी भलाई के लिए इतना कर रहा हूं, फिर भी इसे कोई फर्क ही नहीं पड़ता। तब उस ग्रामीण ने कहा, महाराज, आपने यह तो कह दिया कि पूरे राज्य में चमड़े की सड़कें बनवा दी जाएं, पर यह विचार नहीं किया कि चमड़े की सड़क बनवाने के लिए कितने जानवरों को मारना पड़ेगा। राज्य का कितना पैसा खर्च हो जाएगा। पूरे राज्य में चमड़े की सड़कें बनवाने के बजाय अगर जूते बनवाए जाएं, तो ज्यादा व्यावहारिक होगा। यह सुनकर राजा हैरान रह गया। उसकी समझ में आ गया कि वह कहां गलती कर रहा था।

लोगों की भलाई के लिए उनकी राय लेना भी जरूरी है।

खुली खिड़की

इलाज के लिए कितने डॉक्टर

प्रेम ही धर्म

स्वामी विवेकानंद विश्व धर्म सम्मेलन में भाग लेने अमेरिका गए। वहां एक बुद्धिजीवी ने उनसे पूछा, 'आपने असंख्य धर्मशास्त्रों का अध्ययन किया है। एक ही शब्द में क्या धर्म का सार व्यक्त कर सकते हैं?' स्वामीजी ने तुरंत उत्तर दिया, 'प्राणी मात्र में भगवान के दर्शन कर सभी से प्रेम करो, यही धर्म का सार है।' उन्होंने आगे कहा, 'निष्कपट भाव से ईश्वर की खोज को भक्तियोग कहते हैं। इस भक्ति का प्रारंभ, मध्य और अंत प्रेम में होता है। इसलिए धर्मशास्त्रों में ईश्वर के साक्षात्कार के सरल साधन प्रेम, करुणा और निश्छलता बताए गए हैं।' स्वामी विवेकानंद जब अलवर में रहे, तो लाला गोविंद सहाय से उनकी अनन्य मित्रता हो गई। अमेरिका से उन्होंने लाला गोविंद सहाय को पत्र में लिखा, 'वत्स, धर्म का रहस्य आचरण से जाना जा सकता है, व्यर्थ के मतवादों से नहीं। साधुता ही श्रेष्ठ नीति है और सत्य तथा सद्गुणयुक्त व्यक्ति की विजय अवश्य होती है।' इसी तरह स्वामीजी ने अमेरिका से ही आलासिंगा पेरुमल और अन्य भारतीय युवकों को पत्र में लिखा, 'और किसी बात की आवश्यकता नहीं, जरूरत है- केवल प्रेम, निश्छलता और धैर्य की। जीवन का लक्ष्य ही प्रेम है, इसलिए प्रेम ही जीवन है, परोपकार न करना मृत्यु समान है। सत्य पर हमेशा अटल रहो। धन प्राप्त हो या न हो, ईश्वर पर भरोसा रखो। अपने प्रेम की पूंजी बढ़ाते रहो, सफलता स्वतः प्राप्त होगी।'

सत्संग

-संकलित